डॉ० प्रभात कुमार सिंह, प्राचार्य, सोहनलाल महिला महाविद्यालय
[illegible], समाजशास्त्र विभाग, ग्रामीण समाजशास्त्र
पत्र सं०-VI, बी०ए०(प्र) खण्ड - III

(3) कम जनसंख्या – गाँव में प्रति वर्ग किलोमीटर जनसंख्या का अनुपात नगरों की तुलना में कम होता है। ग्रामीण लोगों के पास प्रति व्यक्ति भूमि अधिक होती है क्योंकि कृषि कार्य एवं पशुचारण छोटे स्थान में संभव नहीं है।

(4) प्रकृति से घनिष्ठ संबंध – ग्रामवासी प्रकृति की गोद में ही जन्म लेते और मरते हैं। ग्रामीण लोग शुद्ध हवा, पानी, रोशनी, सर्दी, गर्मी का अनुभव करते हैं। खुला एवं स्वच्छ वातावरण, शीतल, सुगंधित हवा, पेड़-पौधे और पशु-पक्षियों आदि से ग्रामीणों का प्रत्यक्ष संपर्क होता है।

(5) समरूपता (सजातीयता) – ग्रामीण समुदाय के लोगों के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक जीवन में एकरूपता देखने को मिलती है। उनके व्यवसाय, भाषा, धर्म, रीति-रिवाज, प्रथाएं, आदर्श, समस्याएँ, आचार-विचार एवं जीवन के प्रति दृष्टिकोण सामान्यतः समान होते हैं।

(6) प्राथमिक संबंधों की प्रधानता – गाँव का आकार छोटा होने से प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे को व्यक्तिगत रूप से जानता है।

Page N. 04

ग्रामवासियों में निकट, प्रत्यक्ष और घनिष्ठ संबंध होते हैं। ऐसे संबंधों का आधार परिवार, पड़ोस और नातेदारी है। गाँवों में औपचारिक संबंधों का अभाव होता है। वे कृत्रिमता से दूर होते हैं तथा उनमें पारस्परिक सहयोग एवं प्राथमिक नियंत्रण पाया जाता है।

(7) सरल एवं सादा जीवन – ग्रामीण लोगों का जीवन सरल एवं सादा होता है। वे नगर की तड़क-भड़क, चमक-दमक, आडम्बर और बनावटी जीवन से दूर होते हैं। सादा खान-पान और पौष्टिक भोजन, शुद्ध हवा और मोटा वस्त्र तथा निश्छल और प्रेमपूर्ण व्यवहार ग्रामीण लोगों की पसंद है।

(8) सामाजिक गतिशीलता का अभाव – ग्रामीण समाज अपेक्षाकृत स्थिर समाज होते हैं। उनमें सापेक्ष रूप से गतिशीलता का अभाव होता है, वे घड़े में भरे हुए पानी की तरह स्थिर और शांत होते हैं। वहाँ जाति व्यवस्था ही सामाजिक संस्तरण का प्रमुख आधार है। जाति की अवहेलना करने का अर्थ है

सामूहिक जीवन से पृथक् हो जाना। किन्तु विभिन्न कारकों के संयुक्त प्रभाव से उनके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कुछ गतिशीलता एवं परिवर्तन दिखाई पड़ने लगे हैं।

(9) धर्म, प्रथा और रूढ़ियों का महत्व - ग्रामों में सामाजिक नियंत्रण के साधन अनौपचारिक होते हैं। धर्म, प्रथाएँ और रूढ़ियां उनके जीवन को नियंत्रित करती हैं। उनका जीवन प्रथाओं और रूढ़ियों से बंधा होता है। वे उन्हें तोड़ने या उनके स्थान पर नवीन कारकों की स्थापना की बात नहीं सोचते। बाल-विवाह, मृत्यु भोज, विधवा पुनर्विवाह का अभाव, छुआछूत, दहेज आदि कुप्रथाएं हानिकारक होते हुए भी अभी तक इन लोगों में प्रचलित हैं।

(10) सामुदायिक भावना - ग्राम नगर की अपेक्षा छोटा होता है अतः वहाँ के लोगों में अपने गाँव के प्रति लगाव और सभी में हम की भावना पायी जाती है। नगरीय लोगों में व्यक्तिगत स्वार्थ की प्रधानता होती है तो ग्रामीण लोग सारे गांव की भलाई की बात अधिक सोचते हैं। बाढ़, अकाल, महामारी

और अन्य संकटकालीन अवसरों पर गांव के सभी लोग सामूहिक रूप से इन संकटों का मुकाबला करते हैं। वे ऐसे अवसरों पर देवताओं के यज्ञ, अनुष्ठान और पूजा करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को इस बात का अभिमान होता है कि वह किसी एक गाँव का सदस्य है।